शोध - मंथन, Vol. –VII, No. 2, 2016
ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

कला और कलाकार के सम्बन्ध का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ० रीता सिंह
PDFWM
चित्रकला विभाग
मेरठ कॉलिज ,मेरठ

जीवन और धर्म को कला ने प्रभावित किया है, लेकिन उसने साहित्य को भी सुन्दर बनाया है। साहित्य, दर्शन और काव्य सभी का चित्रकला से सम्बन्द्ध है। विद्वानों ने काव्य और नाटक को चित्रकला के समीप माना है।[1] मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है। कला कलाकार को सपनों की दुनिया में विचरण करने के लिए विवश या प्रेरित करती है। कलाकार सदैव नवीनता की खोज में रहता है। कला भाव विभोर करती है, स्तब्ध करती है और सजावट का सामान बनती है। कलाकार को प्रेम करूणा के साथ जलवायु, सामाजिक परिवेश के साथ–साथ मनुष्य जाति की एकता को संतुष्ट करना होता है और अपने चारों ओर फैली सौम्यता, वेदना और कारूणिकता को सहसूस करना होता है। कला मनुष्य के जीवन के लिए अति आवश्यक है। यह मनोकोष का भोजन है। कला जीवन को ऊँचा उठाने की क्रिया है। विश्व के अनेक दार्शनिकों, कला चिन्तकों ने कला को अपनी–अपनी दृष्टि से परिभाषित किया है।

टैगोर के अनुसार," मनुष्य कला के माध्यम से अपने गंभीरतम अन्तर की अभिव्यक्ति करता है।"[2] **प्रसाद जी के अनुसार, "** ईश्वर की कर्तृव्य–शक्ति का मानव द्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशलपूर्ण निर्माण कला है।[3]

दार्शनिक प्लेटो के अनुसार, "कला सत्य की अनुभूति है।" **क्रोचे का कथन है, "**कला बाह्य प्रभाव की आन्तरिक अभिव्यक्ति है। क्रोचे कला को दर्शन व विज्ञान दोनों से श्रेष्ठ मानते है। **नीत्शे** ने तो यहां तक कह दिया है कि कला जीवन के कड़वे अनुभवों से मुक्ति का माध्यम है। **हीगेल के अनुसार, "**कला भौतिक सत्ता को व्यक्त करती है।"

हमारे देश भारतवर्ष में चित्रकला को समाज के लिए महत्वपूर्ण माना गया है और उसे जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है। यही सत्य भी है। भारतवर्ष में कला का प्रयोग समाज के स्वरूप को

1 भारतीय चित्रकला, डॉ० रायकृष्णदास, पृष्ठ – 41
2 राजस्थानी चित्रकला – जयसिंह नीरज, पृष्ठ सं० – 2
3 काव्य और कला तथा अन्य निबंध – प्रसाद, पृष्ठ सं० – 15

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

सुन्दर बनाने के लिए किया गया है।[4] वास्तव में कलाकार ने सौन्दर्य की अनुभूति को अलौकिक मानते हुए उसे कल्याणकारी माना है। कलाकार के हृदयस्थ भावों की व्यक्त कलात्मक अभिव्यंजना है। विविध भारतीय ग्रन्थों जैसे– चित्रसूत्रम्, कौशीतकी ब्राह्मण, कामसूत्र आदि में कला शब्द की विविध व्याख्याएं प्रस्तुत कर उसका व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है।

ईश्वर एक शक्ति है, आत्मा है, अमूर्त है लेकिन कलाकार ने उस परम पिता परमात्मा को एक अलौकिक उज्जवल रूप देकर उसकी मूर्ति रचित कर भक्त की भावना को प्रत्यक्ष केन्द्रित करने का मार्ग प्रस्तुत किया है। "अर्चना" और "रचना" दोनों में ध्यान महत्वपूर्ण है और इस ध्यान के लिए भक्त के लिए मूर्ति और कलाकार के लिए रूप व भावों का होना सत्य है और प्रतीक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। त्रिशूल, नाग, डमरू अंकित करने पर साक्षात् भक्त शिव के दर्शन कर लेता है। लड्डू का थाल, चूहा, सूंड बनाने पर वह गणेश जी का ध्यान कर लेता है। अतः डमरू, त्रिशूल आदि शिव के और चूहा, सूंड आदि गणेश जी के प्रतीक बन गए। कलाकार अपनी बात को संक्षेप में कहने के लिए कुछ संकेतों का सहारा लेता है। यह संकेत मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के होते हैं। भारतीय परम्परागत लघु चित्रों में मूर्त और आधुनिक कला में अमूर्त रूपों की एक निरन्तर परम्परा चली आ रही है।[5]

विज्ञान और धर्म में चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उनके कठिन अंशों को बिना चित्रों के समझना सम्भव ही नहीं होता है। अतः यह कथन सत्य है कि भारतवर्ष में धर्म, दर्शन, अध्यात्म और चित्रकला एक साथ ही पाये जाते हैं। उनको अलग–अलग करना असम्भव प्रतीत होता है। भारत में अध्यात्म सभी जगह मिलता है और वहाँ कला का विषय व्यापक होने के साथ–साथ दार्शनिक एवं आध्यात्मिक भी है। ललित कलाएँ विभिन्न प्रकार की हैं, लेकिन चित्रकला का अपना एक विशेष स्थान है क्योंकि चित्रकला में मानवीय तत्वों एवं व्यवहार को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। मनुष्य के विचार चित्रों में अधिक प्रभावपूर्ण और स्पष्ट रूप में उभरकर सम्मुख आते हैं। चित्रों में रेखा, रंग और आकार के माध्यम से चित्रकार मन के गम्भीर भावों को अभिव्यक्त करता है।[6]

चित्रकार यदि संवेदना के आधार पर चित्र रचना करता है तो प्रकृति से प्रेरणा होने के कारण उसे अपनी बात को साधारण शब्दों में करना होता है किन्तु जब कलाकार सहजानुभूति को आधार बनाकर आत्माभिव्यक्ति करता है तो अपने गूढ़ अर्थों की अभिव्यंज्जना हेतु वह प्रतीक विधान का आश्रय लेता है।[7] कलाकार के अन्तस् में अथाह भावों का विशाल सागर होता है। जिसमें डूबते उतरते वह रंगों के साथ क्रीडा करता हुआ आत्माभिव्यक्ति को पट कर साकार करता है और इस अभिव्यक्ति में वह विविध भावों को कुछ सीमित प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त कर देता है।[8] इन प्रतीकों को अभिव्यक्त करने वाले कुछ रूप ऐसे होते हैं जिनका साम्य बाह्य जगत् में स्थित भौतिक पदार्थों से नहीं होता वरन् वे किसी अदृश्य विषय की ओर इंगित करते हैं। कला अपनी निर्मिति में सार्वजनिकता का आग्रह ही होती है, चाहे वह कितनी भी वैयक्तिक अनुभूतियों की उपज क्यों न हो। कलाकार का जीवन सामान्य मनुष्य के जीवन से पृथक नहीं होता। उसे भी जागतिक दुख–सुख परेशान करते है, उसे भी रोना और हँसना पड़ता है। उसमें भी प्रेम पाने और देने की

---

4 भारतीय चित्रकला, वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ – 12

5 Jechner George, "An East and West" Marg XXXIII, No. 4 Page-9

6 भारतीय चित्रकला, वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ – 12

7 काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध, भारती भण्डार, प्रयाग, पृष्ठ 35
प्रसाद – "कला जगत में सौन्दर्य बोध को मूर्त ..... उनका प्रतीक बनाने के लिए बाध्य है।"

8 "प्रतीक व्यष्टि में समष्टि का सम्प्रेषण है," – डॉ० रामकुमार वर्मा, इलाहाबाद, पृष्ठ – 118

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

आकांशा होती है यानी वह सब कुछ उसमें होता है जो सामान्य व्यक्ति महसूस करता है और जिसमें से होकर गुजरता है। सामान्य व्यक्ति से अलग कोई चीज या गुण कलाकार में होता है या हो सकता है तो वह है एक अलग दुनिया में जीने, उसे बनाने और उसमें खो जाने की उसकी सनक। यह सनक उसे परम बनाती है, उसे नए संसार में दाखिल करती है। एक सामानान्तर दुनिया में जी उठने की उसकी बैचेनी ही उसे सामान्य से विशिष्ट बनाती है। कलाकार अपनी कला में – जगत से, जीवन से और स्वयं अपने से सम्बोधित होता है। उसके इस सम्बोधन में ही उसके होने का भाव छुपा है और कदाचित् उसकी भूमिका भी।

मनुष्य की चेतना का स्पर्श बाह्य वस्तु जगत अथवा आन्तरिक भाव जगत दोनों में से किसी से भी होने पर जो स्मृति–चिन्ह शेष रह जाते हैं। वे अपने साथ किसी न किसी रूप का आभास छिपाए रहते है। ऐसे ही रूपाभास विशेष की अन्तर–अभिव्यक्ति स्वतः चित्रत्व में परिणत होती रहती है और किसी भी माध्यम से उसकी बाह्य अभिव्यक्ति को उसका चित्रण कहा जा सकता है। रंग और रेखा के विशिष्ट माध्यम से व्यक्त रूपाभास को चित्र की परिभाषा दी जा सकती है।[9] जिससे यह कला संसार संतरंगा ही नहीं वरन् अनोखा भी है।

नीति और सौन्दर्य भारतीय संस्कृति के बहुमूल्य उपादान रहे हैं। इस कारण कलाकार की भावना इनसे बहुत ही अधिक प्रभावित है।[10] धर्म में जिस शक्ति पर, विश्वास किया जाता है वह अलौकिक शक्ति मानी जाती है और यह शक्ति सब कुछ कर सकती है।[11] जीवन की अनेक समस्याओं पर धर्म की शक्ति से ही विजय प्राप्त की जा सकती है। धर्म मानव के व्यवहार–आचरण में पवित्रता की भावना भरने का अमोध अस्त्र है। किसी भी समाज या देश का मूलाधार धर्म ही होता है।[12] इसी धार्मिक दृष्टि को धारण करने राजस्थान का सांस्कृतिक विरासत लालित्य, प्रतिभा सम्पन्न और गरिमामय हुआ। जो स्वयं सांस्कृतिक एकता का सूचक है और युगों से भारतीय परम्परा से जुड़ा रहा है।[13]

उपर्युक्त विवेचन को ध्यान में रखकर यदि वर्तमान कला क्षेत्र का विचार करते है तो क्या स्थिति प्रत्यक्ष होती है। संप्रति परम्परागत कला, लोककला, आदिम कला, यर्थाथवादी कला के अतिरिक्त आधुनिक कलाकारों द्वारा किये गये प्रयोगों के परिणामस्वरूप विभिन्न शैलियों की बहुविध रूपों की जो कलाकृतियाँ देखने को मिल रही है उसकी एक सदी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। रूप व अभिव्यक्ति के विचारों से हर शैली की अपनी कुछ निजी विशेषताएं होती है व साथ ही कुछ त्रुटिया भी। पिछले कुछ वर्षों से इस देश के कला जगत में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। कला को कला मण्डी में तबदील किया जा रहा है। नई कला दीर्घाएं, कला परामर्शदाता, कला संग्रहकर्ता, ई० गैलरी, ई० आक्शन और कला आधारित बहुत बड़े बाजार अस्तित्व में आ गये हैं। इस बाजार में लेन–देन अधिकतर तैलचित्रों का होता है। कला डीलरों की रूचि और झुकाव भी इसी ओर है क्योंकि पेंटिग में आय (कमीशन) ज्यादा है। हमारे समाज में आर्थिक और सामाजिक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों ने कलाकारों को प्रभावित किया है और कलाकृतियों की मांग बढ़ी है। समाज की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आने के कारण कलाकारों को मजबूर होकर परम्परागत और लोकप्रिय माध्यम का चुनाव करना पड़

9 भारतीय कला के पदचिन्ह – डॉ० जगदीश गुप्त, पृष्ठ सं० – 8
10 भारतीय संस्कृति :– रतनलाल मिश्र, पृष्ठ सं० – 191
11 सामाजिक नियन्त्रण व सामाजिक परिवर्तन : रवीन्द्रनाथ मुखर्जी पृष्ठ सं० – 105
12 संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में, – डॉ० उमाशंकर शर्मा, पृष्ठ – 6
13 राजस्थानी चित्रकला :– डॉ० जयसिंह नीरज, पृष्ठ सं० –9

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

रहा है। यद्यति किसी निर्मित कलाकृति के पीछे कलाकार की अत्यन्त सूक्ष्म व संवेदनशील भावनाएं ही प्रमुख होती है। तथापि उसमें गहरी मानसिक जटिलताएं भी छिपी होती है। वास्तव में कलाकार ने सौन्दर्य की अनुभूति को अलौकिक मानते हुए उसे कल्याणकारी माना है।

कलाकार कितना भी व्यक्तिवादी क्यों न हो अपने वातावरण से नहीं बच सकता है, क्योंकि कलात्मक अन्तः प्रेरणा मानव में अन्तर्निहित होती है, किन्तु कलाकृति एक स्वतंत्र और तटस्थ विचार नहीं होती है।[14] यह परिस्थितियाँ जैसे–जैसे परिवर्तित होती है, कला कि विषयवस्तु–रूप, रंग और माध्यम भी परिवर्तित हो जाते हैं, क्योंकि यह जीवन के समान स्पन्दनपूर्ण, परिवर्तनशील और विकासपूर्ण होती है। इस प्रकार कलाओं का सृजनात्मक संसार एक दूसरी कलाओं से अभिन्न रूप से जुड़ा होने पर भी अपना–अपना स्वतंत्र स्थान बनाये हुए है। भारतीय दृष्टि में कवि, चित्रकार, संगीतकार, मूर्तिकार की पारस्परिक दृष्टि सौहार्द्रपूर्ण रही है। कवि ने चित्रों से सीखा है और मध्यकालीन चित्रकारों का तो अधिकतर आधार ही काव्य रहा है। अर्थात् कला संसार अत्यधिक विस्तृत और आश्चर्यजनक है।

[14] आर्ट एण्ड सोसाइटी – हर्बर्ट रीड, पृष्ठ – 66